

251.
Vasista
yoga

आशा सरस्वती
1.986 I
ASHA ARCHIVES

ॐ नमो नमः श्रीगणेशायः रामसहस्रनाम नमो नमः ॥ श्रीभगवान् आज्ञागर्धन. हेतु
 क्ववजीजितेद्वियः भैषाणासादिगति. सविषेसनलार्इनिम्बयमरि. अमनभैयो
 गधारणा रिभ्यासगर्भयोगीलाईसिद्धिआर्तुचन. भनिश्रीभगवान् लेआज्ञाग
 यासाउक्ववजीसोक्वचन ॥१॥ हेउभोसिद्धिकतिचन. धारणाभयाकोकसोहो.
 योगीलाईसिद्धिदिन्याहजूरैकुतुङ्घ. तसअर्थ. मनलाईआज्ञाहवस ॥२॥ श्रीभ
 गवान् आज्ञागर्धन. हेतुक्ववजी. सिद्धिअठारचन. तेस्मध्याउरव्यसिद्धि. आठ
 चनदशभन्यासामान्यसिद्धिऊन ॥३॥ ऊनभन्याअरिमासहिमालधिमामासि
 पुकाशपईवितावविताअवस्यतिरतिअवसिद्धिऊनसमकुतुअरिमासिद्धि
 होवजेऊसकुमहिमासिद्धिहोरुकोऊनसकुलधिमामिद्धिहोसंपूर्णआहिका

राम०
 १

इंजिय वृत्ति मारणा का देवता हरु ज सो कु न कु या प्रिसिद्धि हो जां हों भन्यो त ही प्र का
दा कु उ प्र का व प्र सिद्धि हो स वै ला ई आ का व रा मा तुं. ई का ता पि दि हो विषय भोग
दा प नि अ स क न कु उ व सि ता पि दि हो. जो ई का ग यो सो पा उ तु अ व रो ति दि दि हो
॥४॥ ए सा रि ति को ल क्ष रा मे रो आ रा धा न ग र्हा मा उ त्व त्रि कु न्या अ व सि दि क हि या ॥
॥५॥ अ व स सा मा न्य दि क हिं दू न्. दे ह मा सू धा पि या सा ला गु ॥१॥ ॥६॥ दे वा को स द सु
तु ॥२॥ दे रा को त मा सा द धु तु ॥३॥ जां हों म न् उ ग्यो द ह स मे त त हिं उ गु ॥४॥
त सो का म ना ग यो उ सै रू प कु तु ॥५॥ प र का ण य वे रा ॥६॥ ई का म र रा ॥७॥ दे व लो
क की डा द र्श न ॥८॥ क ल्प ना ग न्य वि ति के उ हि व लु रू प पा उ तु ॥९॥ क से लो छे कि
न स क तु जां हों ई का भ यो ता ही उ तु ॥१०॥ ॥१॥ फे रि अ को थो क क्ष दि सि दि ॥५॥

कहिन्दु. त्री काल को वात जातु ॥ १ ॥ चित्तो त सहस्र ॥ आर्का को मन मा कल्या को जां
 तु ॥ ३ ॥ सूर्य को अग्नि को जल को विष को ईसा दिको वेग संभन गर्तु ॥ ४ ॥ सबे लाई जि
 तु ॥ ५ ॥ उ संगे ईयां वसिष्ठि पति कहियाः योग धारणा देखि उ त्पन्न भया काई सब
 सिद्धि हुन अवजौ न धारणा ले जसो सिद्धि ऊं छ. सो धारणा कहिन्दु ॥ ६ ॥ संस्कार
 पंच महा भूत मासू क्षरूपा कार. मेरो धारणा न्या. अनिमित्त सिद्धि पाउं छ ॥ ७ ॥ महा
 तत्वो पावि उक्त मेरो धारणा न्याः महिमा सिद्धि क मयों उं छ ॥ ८ ॥ परमाणु रू
 प मलाई धारणा न्या जो योगी छ ॥ सो सूक्ष्म काल को विचार जा न्या ल धिमा सिद्धि
 कन पाउं छ ॥ ९ ॥ अथ कथन सूत्रात्मा म विधारणा न्या योगी प्रकासे ना उग
 न्यो कोः सिद्धि पाउं छ ॥ १० ॥ त्रिगुण त्री का माया को अधिदा विष्णु म विवे धारणा

गन्यायोगीईशितासिद्धिकनपाउंछ॥१५॥सकलविराटात्मकनारायणमेरोधा
रणागन्यायोगीवसितासिद्धिकनपाउंछ॥१६॥निर्गुणमविषेधारणागन्यायोगीः
सकलकामनारहितपरमानंदसिद्धिकनपाउंछ॥१७॥श्वेतवापाधिपतिमुदसत्त्व
भयेरमविषेधारणागन्यायोगीजन्मजराम्रथाविपासादोकमोहादिरहितआनं
दस्वरूपपाउंछ॥१८॥संपूर्णप्राणीकोअंतरमाराखाकोआकाशात्मकप्राणस
मुदायमदिरूपमविषधारणागरिमनलेनादकोचिंतनागन्याःयोगीसंपूर्
णप्राणीकोअनंतवित्रविचित्रवाणिमुदछ॥१९॥आक्रानेत्रकनसूर्यमामिला
ईःसूर्यकनआक्रानेत्रविषेमिलाईमेरोभावरोगगन्यायोगीसंपूर्णविश्वसंसा
रकनदेवछ॥२०॥प्राणवायुसगमनदेहकनमिलाईजीमधारणागर्हस्वयोगी

को मत जों हों जों न्य ताहि देह उग्य ॥ २१ ॥ मेरा भक्ति योग को अभा समा पूर्ण भया
 का भक्त ले जो जो स्व स्व रूप धा संभ निई का गयो भन्या पनित स्व रूप धा उंछ ॥ २२ ॥
 पर काया पु वेदादि विदिके संस्कार गयो भन्या पनि. यो आश्रु पी उछो डिम्बा
 ग विले भव रो कुल कुल मा ग या जै अर्का मा जान सक न छ ॥ २३ ॥ आ फेई इका
 ले देह छो उन मन ला गयो भन्या प्राण या म ले प्राण धे विवस्त्र रंघ दार पो
 लि. मला ई प्रण म गरि देह छो डिपर मानंद पूर्व कलिला विहार ग छ
 २४ स्वर्ग लो को दिउ न म लोक मार हा का गंधर्व अ व स रा रु रु गा उंछे
 विमान मा ते स भक्त लाई वसाई हा जि र भ ई मेरा भक्त को ट ह लग घन.
 २५ उडिले जा संकल्प ई का गयो: तो स भ विज स रु जे पा उंछ ॥ २६ ॥ जो सा

विक मेरो भक्त जो ते स्कोति नै लोक माः ज सो मेरा कु कु म च ल च. ते सो स
ब ला ई आ फ्रा कु म म च ला उ न्या कुं छ ॥ २३ ॥ मेरा भक्त ज त म म तु पु भ ति
स क ल मा या. जाल देखि मुक्त भई त्रिकाल को वात जा न्या कं छ ॥ २४ ॥
ज सो जल जं तु ला ई जल मा धा ऊं दे न जल मा तु वि मर्दे न. त सो अग्नि ज
ल विष ई त्या दि देरु को ना रा ग न्या जो उ प दू व दू न जी मेरा भक्ति यो ग ले
यो ग म य भ या का योगी को देरु माला दे न ॥ २५ ॥ मेरा अवतार दृन्दा व ना
दि विहा र ली ला ग न्याः चतुर्भज मुर ला ध र ध नु धा रि स्वरूप मेरा विभूति
बी वत्स व न माला कै लु भ म गि ई त्या दि चिं रु क न ध्या न सर्व क स मा धि ग

न्यायोगी भक्तजन सवै भंडा उन्नत म. भई तिराज मान ऊंच न॥ ३०॥ यस्मा रि
 तिले. धारणा उपासना गन्या. भक्तयोगी जन कनई कस्या का सव सिद्धि क
 न आ उंच न॥ ३१॥ जितें दिये भई सव माया प्रपंच देवि: विभक्त भई भक्ति
 कर्व क मे रो धारणा गन्या योगी लाई को न सिद्धि दुर्लभ सव ससे भक्त का
 अधीन कंच न॥ ३२॥ मेरा भक्त लाई सव सिद्धि काल समय. वरा प्रगारे
 दिन्ना. विप्र कृ. न भुजु न॥ ३३॥ जन्म ले ओषधी ले तपस्या ले. मंत्र जपा दिक्
 ले. जो सिद्धि ऊंच. तिसिद्धि योगाभ्यास मास सहजै ऊंच न. योग ले कृ. न्या: जे
 परम गति द॥ सो इज्जन्म ओषधी तप मंत्रा दिले कदापि पति ऊंच न॥ ३४॥
 तस अर्थ मेरा भक्त को सव सिद्धि को सिद्धि कारणा मालिक यति गति योग

को सांख्या को परब्रह्म ईत्यादि नाना को अधीश मै ऊँ न देवि अर्को को हि सम
जे न भन्याः परम भक्त ते हि होः स सा भक्त ले मे रैत त्व माई म विषे अ भेद
एक स्वर ऊँ छ ॥ ३५ ॥ वाहिर भित्र सर्वत्र मातृ सो पंच म हा भूत दूर्ग घन
त सो म धनि ति नि पंच भूत स भे ते स वे मा परि दूर्ग पु भ नि जा न ॥ ३६ ॥
इति श्री महा गवते शका दश क म ध्य भ ग वा ए उ व व सं वा दे सि दि निर्ग
वे ॥ अ भ म् ॥ ॥ श्री अ क देव जी आ का भ क क न क हं दू न् हे म हा रा जा पः
रि क्षित आ ता हरि कि मा या क सा त र ह कि भ न्या आ प्रे या फ र्ज्ञान स्वरूप
भ या का हरि कि मा या ले सा आ जी व र दे ह को सं वं ध ऊँ दे न क सा त र ह ले
ऊँ दे न भ न्या ज सो स्य प्रा दे वे रः क र्म भा ति त ऊँ दे न त सो उ ऊ न् ॥ १ ॥ यो सं सा र

पनि माया ले नाना अतंत कैवा ल यौ व न देव मनुषे वरु रूप पनि
मा द्वे ले भया को छ. माया गुण ले गरिर न न ग म म म अ हं मे रो भ
नि भू त्पा को छ ॥ २ ॥ आ प्रा ये तं न्यो मार स्या का जी व जो छ उरु व र
क ति उ ई दे वि पर आत्मा छ आ हं म म ता को आ दे वि न् पू र्ण स्थ स्व
रूप व्या फै आ फु रु छ ॥ ३ ॥ आत्मा शु क ह व स्र भं ना नि मि त्त सां वो व
तं व जो आ द र ग रि से वा ग रि या का भ ग वा न् जो छ न्. सो व ल ला इ जो न
रूप द र्श न दे वा या था त त प त जो वा रि क स्या था त्या भ ज न् ग रि मो क्ष
ह व स्र भ न् ना नि मि त्त को द सा हो ॥ ४ ॥ व स्रा जो छ न्. सो ना री य सा का ना भि

कमलदेविनः उत न भयारः यो कमलका हां देवि उवाको रहे दभ
निकमलनामिभिन्न उवा अत्यगर उभनि जां दा अत्यन पाई फेरि फकि
कन कमलमावसिः यो सृष्टिक सो गरिरं न उं मं नानि मित्रः कमल
मावसि हर्दा भयो ॥ ५ ॥ न व वृत्ता जो धन यो सृष्टिक सो गरिग उं भना
निमित्र विं तना गदा भया चिंतना गदा मा जल मा हां सके थालि दुई अ
भर उदा भयाः कौन कौन अक्षर भयाः कका देवि मकार संमका अ
भर माः सो होरः स काई सो तो वर हो भनौ लातः जौ ना पुरुष को केहि
देन उनी को सर्व स्वध न कहि द ॥ ६ ॥ आज यो कक्षे दो भनि चारै दिसा हे
दा मा जव कोहि देवे न नरयो मेरी हीत निमित्र होला हि ते हो भनि नि

अथेमानिकततपहंसनलगार्तुदाभया॥७॥ताहंतातवस्माजोघन
सोसंपूर्णलोकप्रकाशंन्यातपगर्भयाकसोतपभन्यादिवेहजा
रवर्षप्रसविसर्वशुद्धिपमनपवनजितीतपगनामहंअथैततपवरी
कुंदाभया॥८॥तस्मात्तथाभगवान्लेवस्मालाईअतिश्रेष्ठवैकुण्ठलो
कप्रसाउंदाभयाकसोलोकभन्याजाहंकेवाभोहउःखधेनजाहंप्र
आत्माआत्मानानिलेमात्रैपुण्याश्रुकोवाहंतलग्न्याजाहंजंघन॥
॥९॥कसोलोकभन्याजौनलोकमारजमसत्त्वकोमिलितजंहंघेनजं
हंकालकोगभेधेनरागलोभमायाजाहंघेनजौनलोककनदेवदंन
वादेत्यलेतेवागरियाकानारायणकामकमात्रैवस्यघनश्रुकोगभेधेन

॥१०॥ कस्तोभक्तभन्या स्या भवर्णशुक्रमार्गवतुर्धुपकाशश्रमालमं
निकोगहनाजस्तोभुद्वस्वरूपभयाकामिलकमलजस्तोनेत्रपिता
स्वरूपदिन्याकाश्रयंतशुदरश्रितियेजरची-उनेमात्रवस्तुदत्त॥११॥
कस्तोभन्याभुगांभनिकमलकुंडलेभुकुटमालालेअतिस्वभायमा
नगरियाकियौनलोकमाश्रयंतस्वभालेभुक्तभयाकाविमानले
स्वभाभयाकादत्त॥१२॥ कस्तोलोकभन्यासद्वर्णलक्षिकास्वभावले
विजूलिलेजेंदिसोभापुकाशभयाकाजस्तोअकाशकनमेघलेविज
लिलेविमानलेस्वभाकुंडलजौनवेकुंडमहांशीभुविमानलक्ष्मीलेभी
नारायणकायाउकोअनेकस्वर्थगरिभजागर्दिन॥१३॥ कस्तिलभिम

भन्या वसंत रितु का भमरा ले भूं भूं स दले गरिया कि पलं मा कुल दिआ
कुविभु का कर्म गा उदि से सो लोक विषे विभु कन देखता भया क सो विभु
भन्या लक्षिका भक्त का जगत् का पति कन देखता भया ॥१४॥ क सो विभु भ
न्या अनंद नंद उवला दिले वडा वडा भक्त ले सेवा गरिया का आ फ्रा भन कन
क पा सन मूरव भया का भक्त कन देखते मा हर्ष कन दिना आं बां ज स्का प्र स
त्र हां सा ले ला ल ला ल स्वार विंद ले स्व भित भया का धन ॥१५॥ क सो उरु भ
भन्या कि रि ट कुं उल वतू वां ह पिता मर धा रि छा ति विष ल क्षि ले स्व भा भया
का म्र ति श्री सु सिं हा सन मा वस्या का प्र कृ ति पू रू ण म ह त त्व अ हं कार वो
उ स रे का द वा इं डि य म हा मू त पं च त न् मा त्रे स ति ले दृ षि भ या का आ फ्र

भगवान् जो धन सो आकाश मम हों आ फै से अर्थ ले सुख भया का धन ॥ १६ ॥
ऐसा नारायण का दान ले गरिव त्याग को हर्ष ले दुर्लभ भया को हृदय रोमांच
ले शुक्त भया को सरिर रस सावसा जो धन सो प्रम संग आया का आशु का धार
राव हाउं दैन म हं दाले गरिजौ नृपा उपा प्रजं धन उं नै हरिका चरण कमल न
नमस्कार गदा भया ॥ १७ ॥ कसा बुझा भन्या अतंत विष भया का सनु पमार
सा का उजा को रुष्टि गन लाई नारायण का आता माना रसावसा कन वि
तिले शुक्त भया का मत ले नारायण जो धन च बुझा कन बाहु लिले समा दे
थो रे हास का स्वभाव ले शुक्त भया का सो भाव को वा निले को ह भंदा भया ॥ १८ ॥
श्री भगवान् आता ग धन हे देव ग भ विर काल उज्जित कात पले कुयो गि कु

दलेषु तिन राई सन्दो मति मिले सुखि गस से उंका कारण लाइ हो भन ॥ १२ ॥
 हेव लावर को पति मै ऊं ति घाम न ले आंघा को वर माग जो हो सस मेरो दर्श
 म पाया को रु देन वदिसं न डः खऊं दुअवति मि कन कल्या न हो ला ॥ २० ॥ ज
 व मेरो लोक देखा पदि मन ले आघा को भाव गुग्य होई का मै रै हो मेरो दया
 होत्य पाया हो भन्या जो नर कांत माव सित पत पशु वेर पर से छ त पग मो ते
 हि ज पा मेरो हो ॥ २१ ॥ सुखि गरी भावि अरंभ ग दमा हेव लाति मि कर्म विषे
 मोहि न गरत संथ कर्म त्याग गरित ये ले आत्मा अह भव भेसा मर्थ हुँ ला भन
 नि नि त त पत पशु ति उ प दे स ग म्यां थं त प भन्या को मै रै ह दय हो मै ॥ २२ ॥ त
 स्मा त कारण मेरो पश कर्म भन्या को त ये हो त ये ले सुखि ग गुं त ये ले पाल

ना ग र्ध. त पे ले सं हार ग र्ध ॥ २३ ॥ व सा विं ति ग र्ध न. हे भ ग व न् सर्व
आ णि का रु द य वि वे अ वि ष्टा ता भ ई उ दि स्थ रू प भ ये र वि रा ज मा
तु ग न्या का दौ ह जुर का रु पा ले निर्म ल ता न ले ग रि आ त्मा वे द अ त
मै ले जा न्या ॥ २४ ॥ हे ना थ हे स्वा मि अ व ह जुर को स्थु ल स रू प त मो स्तो
रू प जो ना क रा ले जा नि हि न्द्र सो आ ता ह व स ॥ २५ ॥ को न् भ न्या को न्
यो ग ले ग रे र रा कि स हि त भ ये र सृ ष्टि ग र्धो अ नि सं हार ग र्धो के रि व स
दे हि धा रे र आ र्थे वे ल द द्यो ते हि ॥ २६ ॥ त स्मा त् हे मा ध व स मे सं क ल्प स्थ
रू प भ या काः जो ना उ दि ले सृ ष्टि पा ल न् सं हार ग न्या ज सो मा क रा ले जा
ल कि न्द्र. के रि आ र्थे ले उ ठा ई लि न ग र्ध त सो सा म र्थ उ जा जा व स ॥ २७ ॥

हे भगवन्. हं तु रक्षा सिद्धा लो ग न्या का उ प देश ले सृष्टि गर्भ. हे प्रभो. हं तु
 रक्षा ले सृष्टि गर्भ मा मा या मा व द न ऊं ॥ ३८ ॥ हे ईश्वर हे स्वा मि आ क्रा स
 वा जै मे रो हो भ न्ना नि मि त्त हा त मा स मा तिः कृ पा गरि या कि मः सो नि मा से
 वा मा ला ग्या को मः आ हां सं म या कृ त भै सृष्टि गर्भ हा प्र जा सृष्टि गर्भ मा म
 व स ऊं म दे वि श्र को को हि है न भ नि स सो ग भ म ला ई न ह व स ॥ ३९ ॥
 श्री भगवान् आ ता ग र्ध न. हे प्र हा आ न्ना अ नू भ व यु क्त भ या को म क रं
 तु से उ क सो भ न्या पू र्ण भ कि यो ग ले यु क्त भ या को ह ॥ ४० ॥ ज सो त्व रू प
 ज सो भा व ना सं ता नु सो गु रा ज सो क र्म स से स ये मे ता न मे रा कृ पा दे वि
 सो ला रु न् ॥ ४१ ॥ क सो भ न्या सृष्टि दे वि पू र्व प नि मे धि जां स्थु ल सृ क्षा ई

राम०
 २

ॐ ईको कारण अविधि ये न मे महालय भया का पिया ये सहि को लये भ
या यदि मे रहना दुजौ न ये देविया को जगत् स्वयं नि मे हुं पु लय भया प
दि को सेष प नि मे हुं न आ दिन अत्यंत दिति ये वरि पू र्ण हस भनु
॥३२॥ क सो भ न्या जौ न आत्मा माना ना दे न जो ना ना द्यो आत्मा
मा दे न त्यो का सो भ न्या मे रि मा या हो क सि मा या भ न्या ज सो आ
या का भां ति ले दु ई वं दु मा दे वि या ऊँ क सो भ न्या य ह सि त व स्या को
रा ऊ न दे वि या ऊँ भू या को द ॥३३॥ क सो भ न्या ष व मा हा भू त सा ना
उ ला पा रि वि से उ वे द भ या का आत्मा द न प नि दे न न प नि त से म
प नि दु प नि दे न प नि उ ऊ न ॥३४॥ आत्मा त त ज न्या ई द्यो ग न्या ले र

सा विचार गुरु कस्तो भन्या कार्य विवेकार न ले गरिष वे श भया को का
 रन विवे न्या रा र सा को जा ग्व त स्व प्रा सु प्र विवे सा दि भया को स्व इ आत्मा
 हो तु ऊ ॥ ३५ ॥ हे बु सा रे का ग्व वि त ले स हि म त मा र रु र ना ना त र रु का सृष्टि
 ग र्त्त मा य नि म क र्त्ता हुं भ न्या मो ह क दा वि ह वे ना ॥ ३६ ॥ श्री सु क दे व जी य
 रि श्री त क न आ सा ग र्त्त न सं पू र्ण आ र्णा का अ धि य ति बु ला क न आ भ ग
 वा न ले र स प रि का र ले आ सा ग या स्त द स्व द स्व रू प आ फु र द म दा दे व ते
 अंत र्धा न भ या ॥ ३७ ॥ क सा वि सु भ न्या आ दि अंत र्धा न भ या का वि सु क रु
 कु म लि अं तु लि वां धि क न म स्का र ग रि स र्व प्रा णि न य भ या का बु ला जो
 ध न स्व यो सं सा र प रि ले का जां हि सृष्टि ग र्दा भ या ॥ ३८ ॥ क सा बु ला भ न्या उ

राम
 १७

जा को धर्म को पति वल्लभ जो छन्दः स्वपुजा को कल्याण वल्लभ नमः नमः नमः नमः
जा वठा उं न्या प्रयोजन मेरो हो भनि को हि स क दिन सं म आ फ्रा ति स धर्म
मार हं दा भया ॥ ३२ ॥ वल्ला का सं वै उत्र मा पिया रो नार द जो छन्द सो सु सार
ले न सु ता ई ले आ फ्रा पि ता वल्ला क न पु सि ग रा उ दा भया ॥ ३३ ॥ हे रा ज न प
रि क्षी त क सो नार द भ न्या व डा भा ग व त मा शा का पति वि लू क न जा त्रा धो
ज दा भु ध्या उं दा भया ॥ ३४ ॥ हे प रि क्षी त सं पू र्ण प्रा णो का वा ज्ञा भ या काः आ फ्रा
पि ता पु सि भ या का दे ध्या र दे व त्रा पि ना र द जो छन्द सो नो नू क रो म ला ई सु धा
उं धी उं हि क रो ना र द दे उं सु धा उं दा भया ॥ ३५ ॥ वल्ला जो छन्द सो आ फ्रा पु त्र ना र
द ला ई उ ति ले पु त्त भै यो भा ग व त क हं दा भयाः क सो भा ग व त भ न्याः द स ल स

लाले सुक भया काना रास रा लो वला लाई व ता या को हो ॥ ४३ ॥ हे प रि शी तः
 सहि भा ग व तः सर स्व ति न दि का त ट मा व सिः पर वु ला क न ध्या न ग द मा व
 ज ते ज स्ति व्या स ला ई ना र द जी लो क हं दा भ या ॥ ४४ ॥ हे प रि शी तः यो वि रा ट
 ह त व दे वि तः वि श्व सं सा रः क सो ग रि भ यो भ नि ति मि ले सो धा को जो न
 प रि का र ले यो स्तु ति भ यो स्व म क हं तु अ र्प ल प नि क हं ला ॥ ४५ ॥ इ ति
~~श्री उ रि मा ता त वि व ला ने श्री भ ग वा न व ला सं का दे त्रि ति यो धा ये ॥ ४ ॥~~
 श्री कृ त ना मा यो रा णि वि मि का र ण वि वे अ ठा अ ति रु ज्जा र सौ त क ह त सं
 ग मा ता ग र्द नः हे सौ त क मु ते स्वर ले सु क पू व क त प मं हं र ला का व्या स
 क नः श्री ना र द जी हा त मा लि क नः व डो य रा गा उं दे किं चि त् हा सि के हि व व

मन्त्रो लक्ष्म्या ॥१॥ श्री नारद जी या सकल आत्मा गच्छन् हे परासर उन्नत सरी
समिमानि आत्मा ते स आद्य सरिर ले संतोष कुरु क्वा तिष्ठो अभिमान स सो
आत्मा यो मनः स सा ले म संतोष कदा पि कुरु न्या दे न ॥२॥ योग्य वर्मा दिव जिह्वा
सर्वे व वलार मा र्ग व दित्या विस्तार जा निहिता परिदृष्ट भया की रे सा आश्चर्ये ला
ग्दे भार त पति वता शो ॥३॥ जी न सना त न य व वल तो पति पक्षी उ अ स्य नि वि
चार ग योः आत्मा ला ई सो क के न ग द्योः अत क्त नार्थ भया को दे न भ न्या जां
हि के न ग द्यो ॥४॥ श्री या स जी विंति ग द्यन् शो ति मि ले आत्मा ग या की योग्य हो
ते सो द न पति आत्मा संतोष कुरु दे नः वा रि र मा सि क उ ई उ कार को कार ए आ
त्मा अथ क ते सा इ संतोष कुरु न्या की न हीः अति बुद्धि भया का उ ल्ला का आ दे धी

उं त्यं न्य भया का नि मि आ ता रु व स ॥ ५ ॥ स भै उ स ति मि जा न्द दो जी न का र रा तं
 हं पु रा रा पु रु ष का र्थे का र रा का प नि हे तू जी न्द स सं क ले लेः दो सं सार क न य ना
 उ न्याः आ फे रु न्या ति न पु रा लि का र्थे ग न्याः आ फु नो गु नै रु न्याः रु सा पु रु ष को
 उ पा स ग न्या का आ फु आ नो रु व स ॥ ६ ॥ सूर्ये जं हि ति नै लो क मा कि नू कुं घु क सो
 भ न्या वा पु जं हि स भै का अ त रा भै म न उ डि को वा न जा न्याः प र वु ल वि वे स्वा धा
 ये का नि म ले र यो ग ले ग रि षा र भ या का ति मि वि वा र ग नू रु व स को नू कू रो पु
 ग्ग को र्हे न ॥ ७ ॥ वा मा रु द आ नो ग र्ध नः हे मु ति ति मि ले भ ग वा न् का य रा म हि मा नि
 म ल व डि ग रि भ न्या को र्हे नी नि म ल य वा वि ना ध मा दि ता न ले भ ग वा न् क रा पि
 सं तु ष्टुं दे न न् सो ज्ञा त नि मि ला ई च द्या जा हि ला ग्द ॥ ८ ॥ ज सै ध मा दि को ध म् म र्थ
 का म सा धा ना य नि ग यो वा ञ्छ दे व का म हि मा व र्ण न् ग र वा सु दे व को व र्ण न म हि मा

भयाको धैत ॥ ९॥ यौन कवि का वाणिमहं: हरिकाश वा धैत न भया विप्र का
वाध न तप नि: सो को वाज सा का मि पुरुष को विशा रा तिर्थ भनि: वडा वडा यो:
गी जन रु र भ न्द न्. मा न स ला उ मा धै ल न्या ज गा मा हं सा हं रु: को वा धै ल न्या
ज गा मा क दा वि प र मा उ दै न न् ॥ १० ॥ क सा क वि ता ला ई व च न को प्र योग भं
नु भ न्या यौ न क वि वि धि: र स्य अ लं का र ध न्द सा ध नि ई चार ले ड र वी त ध त प
नि: स प र्ण म नु य को का प काल न्या य वा ले वि क्ति त भ या का: भ ग वा न को म
हि मा: ना उ ध भ न्या सा धु ज न रु र हं न्द न्द र भ न्द न्. जौ न ना म सा धु ज न रु
र को हि भ न्द न् भ न्या सु न्द ध न्द सूं न्द ध न्द भ न्या क हं न्द न्द को हि धै न न्द भ न्या
आ धै की र्त्त त ग द ध न् ॥ ११ ॥ नि क र्म भ या को ज्ञान अ त्प त ध न्द त प नि रु रि भ

किं हितं ह्यभन्यातो सुहाउ दीनक सो गदिभ न्या सो धन काल मा फल काल
 महां वारं वार उं पड ग न्याः स्वदिन्या र सो कर्म ईश्वरार्थ नभया को दीनभन्या
 वर्थे ह्य सो क सो ग रि सु हा उं ला ॥ १२ ॥ तस्मात् कारनात् हे हे महाभाग या स नी अ
 कृति तं बुद्धिभयाति मिश्रु जय श भया का स न्वा दिवति से संसार को बंधन
 मत्तं निमि त्र भया का स ताति मि भ ग वान् का चेष्टा स मा धिले विचार ग
 रिव र्ण न्ग र ॥ १३ ॥ भ ग वान् का य रा दे वि न् पृथ क संन्यथा बुद्धिभया को
 रूप ना म मा रहित क ते था त न या या बुद्धि म ति विष वा यु ले उं ड या को स
 मूढ का ना उं ज हि कुं ह ॥ १४ ॥ तस्मात् हरिका य रा वि ना भा र ता दिग्गं थ विषे
 मिथे का म्य कर्म स्व भा व भा र त्तं भ या रा यि उ रू ष का धर्म विमि त्त होः ति मे वा

राम
 १२

ईऊऊमचलाउंदातिमोमतिउंटीपयोअन्यायभयोतिराभावचनलेतंलंरु
हिपुरयधर्महीभनिउदतिभयाकीईतजनरुहनिदतिमार्गविवेकोहिलादे
नन॥१५॥तेसोभन्यासमोक्तियागगरिःसद्धिदानंदसुषभथायदिहुरिकोना
मयदाकाचाहियोभनीलातचंनंतुअपारभयाकाहुरिकोआनंदसुखकम
जूनचनूरयोगीहनुउनैलाईमाअयोग्यहजूनआमादानिनभयाकाविषय
सुषसोभलाकाहामिजसालाईनामयशालेमुक्तमयाकाभगवान्देवा
चं॥१६॥तेसोभन्याकाम्यधर्मादिभुनर्थकाहेतूभयाकोविज्ञानेभित्तिकसुधर्मप
पनितकगरिकनहुरिभजनमात्रश्रेष्ठधनभनिआताभयोतसुर्थकदावि
हुरिभजनमापरिपाकभयातचिंतादेनकिंचित्कांचैरह्योभन्यातेसैक्षिणमा
मयोभन्याहंसकोचालनकीवाकोचालभयोभन्याकसोहीलाभनीलानाफु

धर्मदोडिनिबोयोनिमागयोतवनिहरिभनगन्यालाईकोनेआश्रममापनि
 अकल्यातधैनयोभजनगर्देननभन्यासधर्ममादतपनिसवेअनित्तुं
 छ॥१७॥तवगान्नाभयरतेसेनिमित्तयेत्रगन्योनकारणताहंसुखदुः
 खभन्याकावृत्तादिस्थावरयथातपचित्तकर्मदेवाईकाअतिगहिरुकात्
 लेपाईत्यावेगभयाकोजसुखकोईछासवकोईगर्दछनः दुःखकोईछा
 कोहिगर्देननतपनिआफेपाप्रकुंछ॥१८॥तस्मात्तुह्यासजिमुकूदसेकाग
 न्यामनूषादेहविनाअकेदेनकूयोगीछतपनिकदाचिनरकमहांपदेन
 तसर्थः योनहरिकाचरणकनः अलिंगमन्याकोसमज्ज्यालाईकसो
 रिदोउनाकोईकाहवस योनरसंसार रसकोअग्रहभयाकोछ॥१९॥

कौ न हो भगवान् को लिला भनौ लातः यो विश्व भगवान् को रूप हो रस वि
श्व देवि आ फुं भगवान् भि न दन. यौ न ईश्वर देवि न. जगत् को जन्म पा
लता संसार ईति हं छ स व ता उ छ त य नि स वै ति मि जां दे हो त य नि श क
दे वा दे वीं जां ड ऊ ॥२०॥ ति मि आ फे मा आ फे जा न आ फु वि धे वि चार गर
आ फु दे वि आ फे हो के व ल पर मे श्वर का लिला लि क न आ या हो. अत
त ए व ति मा अ न र्थ न न दै न वि श्व का अ व ता र ज ग त ला ई क ह्या रा ह
व स भ न्ना नि मि त्त भ ग वा न्को प श क म हो भ नि पु ऊ न् ॥२१॥ ए हि फ ल व ड
म रू ष को हो ए हि त य स्था को. ए हि व टि या प ने को ए हि य या को प त र वा ता
दि को दान को के रे ना दान नु न्या फ ल हो भ नि वि दान् ह रू ले नि रू प न ग

मा का च न त प स्यात्. उ त्त म शो क उ र ग वि व र्ण न च ज ति भ न्या दे वि न व
 व ज को स र्ग न ॥ २३ ॥ म ये ह ग या का क ल्य वि वे को हि वे द क न ज न्या ब्रा ह्म
 रा उ त्त कि दा सि कि ष्ण त्र भ या को पि जं यो गि ज न का से वा नि मि त्त व त्त
 मा स व र्ण वि वे ला ई दि या म वा ल भा व मा धि न्नां ॥ २३ ॥ त्रि मि यो गि ह रु
 ले म वि वे दे ष्ण भ या. क सो म भ न्या वा ल भा व द्यो आ को य व ल ई दि
 य न भ या को वा ल क्रि डा न ग न्या. सं गे र ह न्या रा सो म वि वे त्त ल दृष्टि
 दृष्टि थी या त प नि सु सार ग न्या थो र्दे वा ल न्या. म वि वे सु नि ह रु अ तु ग
 द ग र्द भ या ॥ २४ ॥ उ तै ले भो ज न ग र्द मा पा त्र मा लो ग्या को से ष उ तै का
 आ ज्ञा सि त पा ये र रु क वे र सं तो ष मा न्यो. मे रो सं द र्श पा य दु द्यो. रे सा

राम०
 १५

उकारलेखक वेतभया को मेरे. त्रिनिमुनिह रुकाधर्म विवेमनरु
विभयो ॥ ३५ ॥ तेस्या न विवेदिनः. दिने भगवान् काली ल्या कथा हागा
उदा मुनिह रुका अजग्रह ले सुदो भया ज्ञान नरु हरि ले जान्या. तिक
था वडा अकाले यद म्भद मेरे अतिषिय भयो. अतियरा भया
का भगवान् हरि विवे मेरे मतिगयो ॥ ३६ ॥ हेम हा मुने व्यास तिने
विवे अतिपिति भया को मेरे मति तां हां देवि न के रूघु दे नर. यो नू म
तिले यो सुल स रूय भया को दारि रूय च देवि न भिन्न भया को
म विवे रूय अक्रि अविद्या रुपि माया ले कलिया को ननु वरु तां हां हां
यो देव ननु ॥ ३७ ॥ यसा प्रकार ले वरु सरद डई अतु काल विवे हरि आ को

निर्मलः यदा सुंदो महात्मा मुनिरु रिले चित्तं नगरिया को. सुंदा सुंदे
रजो गुणत मो गुण को स्वभाव काल न्या भक्ति उत्पन्न भया ॥ ३८ ॥ सत्ता न
रुह ले अरु रक्त भया को निष्ठा विन प्रसन्न काल. बाल दहई द्रिय जित्ता
को ति निरुह को सेवा गयी ॥ ३९ ॥ भगवान् ले कहिया को ज्ञान मुनि उ
पसा भात ते स्थान देषिन्. ज्ञान मुनि रुह दिना विषे दया लुभया
काह पा ले म विषे आता गरिजा दा भया ॥ ४० ॥ यौन ज्ञान ले भगवा
न वाश्रदे उ को माया ति निके प्रभा कन ज्ञान्या. यौन ज्ञान ले भाग बदा
म माया प्रहृष्ट न ॥ ४१ ॥ हे वासरा रा ज्ञान को साधना गन्या. तिन ताप
ह साई लाज सत्त्व सोध म्या हो को न हो भने रयी न स वै को नियंता भा

राम०
१६

को भगवान् परब्रह्मपूर्णरूपतितिविषेसवैकर्मअर्पितभयोभन्या
तेहिवषधलो॥३२॥ नहिनहिसंसारकाहेतुभयाकोकर्मतेश्वैकसा
गरितिनतापहर्लाभनौलातहेअवतयोन्वब्रह्मलोरोगर्भतन्त्रकुंदरो
गगशउन्मावब्रह्मलोरोगपरत्तदेन॥३३॥ एस्वेयोन्योन्क्रियायोग
रिहिन्दुन्ईसभसंसारकोहेतुकारणकाहिन्दुन्फेरितिनेकर्मक्रि
यापनिष्टतैजहित्वेपरब्रह्मविषेकर्मर्पनलोकातवधारजान्दुन्॥३४॥
योन्संसारविषेभगवान्सन्तूष्टहुन्माकर्मगरिहिन्दुभक्तियो
गलेमिश्रितः योन्ज्ञानभगवदधिभयाकोः ताहं देविन्उत्पन्नभ

या को ज्ञान कर्म स्वतै ना स जुं छन ॥ ३५ ॥ मों हों संम कर्म ग दं छन ॥ अरु गुरु द्यो
 ठि क ह का ना म वारं वार गा उं छन भ ग वा नु वि सा ले ग रि उं नै को स र रा ग दं
 छन ॥ ३६ ॥ भ ग वा म संपु रं से अर्थ उक्त सं त र्था नि नि मि ला ई न म स्फार छं ॥ ह
 दय विषे अ वि न्न भ या का ति मि क न मे रा म न ले वारं वार ध्या उं द द्यो रां क र्ध न
 वा अ दे उं उ व म म नि रु द्य ४ ॥ गुरु ले उं पा स ना भ या का ति मि ला ई न म स्फार
 छ ॥ ३७ ॥ ई ति वार मूर्ति का ना म ले ग रि मं त्र मूर्ति मा त्रे जा न्या मं त्रे को मूर्ति भ या
 का व म द छि ले न दे वि न्या र सा मूर्ति जा न्या पुरुष क न यौ न प्र जा ग रा म
 त्या स य ज्ञान भ या को पुरुष हो भ नि जा नु ॥ ३८ ॥ हे व स रा यो आ फु उं प दे स मे
 ले अ नू वा न ग रि या को म ला ई स अर्थ ज्ञान जा ने र आ फु वि षे भ क्ति के रा

राम०

११

वजीदीदाभया ॥३२॥ हेदृशभक्तः तिमिलेठेरैसून्याकोद्योः भगवान्काय
दाकहुयौननामभुन्यालेपुजनाकोजांन्यासजनहस्तकाईयापरिपूर्णा
कुंघ्र्यौनदुःखदेविन्. मूक्तजौनप्रकारलेकुंघ्रन्. लोवटियागरिक
कुं. तेसकेसकर्मकोवांति तेसाश्रुप्रकारलसजनहस्तमान्देनन्.
॥४०॥ इति श्री लूरियात्मनवप्रल्लसाने श्रीनारदयाससंवादे द्वितीयो
ध्यायः ॥२॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो नमः पूर्वाध्यायमाशेष
कलेनिन्दतिरस्कारसहस्रभुनि श्रीभगवान्ले आज्ञागुन्यामाउद्ध
वजिर्वितिगर्धनहेप्रभो अर्कालेनिन्दतिरस्कारगुन्याकोसहस्रभु
निहसुरकाभक्तदेविः अर्कालेतनसहिसकन्दमोदप्रभुनिप्रल्लग

याः श्रीभगवान् वामदेवजिकोचर्याः इतिहास आतागर्धन ॥ १३ ॥
हे उज्ज्वजि सुन तयो करो सा वो भन्यो ला ता वरु वा न ले हा न्या को स
हं छ ॥ १४ ॥ हे उज्ज्वजि सुन तयो करो सा वो भन्यो ला त वरु वा न ले
हा न्या को स हं छ ॥ १५ ॥ उज्ज्वन ले निंदा रु पि वा रा ले हा न्या को स
हिक न आ प्रा वि वे क मा र हा न्या उ भ छ ॥ १६ ॥ अ सं ध्य मा र क कुं छ
न ॥ १७ ॥ रे छु रा को स व य रि ना म रे क इ ति हा मि चि त्ता ई सु न
म क हं छ ॥ १८ ॥ को हि रु क मि सु ला ई उ ज्ज्व न ले अ न र्थ गृ द्द मा आ प्रा
वि वे क धि र्ये मा र हि क न मे रा भ क्ति ले उ द भे ग या को वि वे क वा
नि को जा न सु न ॥ १९ ॥ आ प्रै क म को य रि या क भो ग आ फु ले णा उं छ ॥

भनि धैर्य ले उक्त भी कसे मा दो घन लाई उ न को हि र क अ वं नि दे स
वि धे ध नि अ तं त का म वि धे ल क को वि सु दी ई व ल रा धि या ॥ ६ ॥ दा
मु भा ई ला ई प नि क हि न दि न्या अ ति धि या कु मा ला ई प नि आ द र रा ग
म्य वि च न ले प नि म न न ग न्या ॥ ७ ॥ दो रा रि ध रि या र ला ई व ध न स कि
य ला भ नि रा मो ला उ न मि ठो घा न न दि न्या ले प रि या र य नि ति वा ल
रा दे वि उ सि कुं दे धि या ॥ ८ ॥ उ वै लो क मा वि रु द्र स्व भा व भ या काः स
सा ई वा ल रा दे वि दे व ता ह रु ष नि वि रु द्र हं था ॥ ९ ॥ स ता उ टि ई वा
ल रा को ध न क नः को हि र क दि न मा व डा ति टि न त ले क मा या को ध
न जो धि यो स्व न उ कुं दे भ या ॥ १० ॥ के हि ध न को र ले के हि दा मु भा ई रु

लेकेहिग्रहादि लेकेहिभुमिमादयायाका. उरिभुमिलेकेहिधनका
 ललेकेहिजालले हरिकनसकिंथो॥११॥ सुसातरहलेधनसंयति
 नष्टभयामातिबालराचिंताकिंकिंजदादायुभाईलेपरियाहर
 लेपमितेलागरियाकाविरक्तकुंधा॥१२॥ सुसुरितिले. उदासभया
 काः ओठतालुसुकाकातिबालरालाईअतिवैराग्यजात्रुदोभ
 यो॥१३॥ आर्कमनमाविचारनलाग्याआजसंसमैलेतथाधव
 वकलत्रादिकाचिंतालेः आयुजनमसुमात्रां दुधमादिकाममाप
 निधनलाईनउसेनष्टभयो॥१४॥ धनदूत्रकलत्रादिकाचिंता
 लेः नत्राहासुखनपरलोकेमासुखः केवलकुटुंबकाः आसैलेकांछि

राम०
 १२

न्या लाई परिनाममाः नरकवासमात्रैरुन्यारहेछ॥१५॥ कसै गुरा क
सै जस हवस तपनिलो भले हर्दो रहेछः कसै रामो छ तपनिः ऊ
एरो मभया पदि रूप जसै हरा उंछ न तसै लो भले सभ गुरा मेर
जो रहेछ॥१६॥ पहिले धन भये न भं ना को कि छिः धन पायो तः मा सि
रला वो रिला भं ना को कि छि स कियो त भुव क्या छाला भं ना को कि छि
स सरितिले धन काई छालो भग्न्या लाई सुख कहिले पनि रुन्यार
हे न छ॥१७॥ वो रिहिं साउ दो गुमानः काम को धा दिले उ न्या द भे द दू डि
वैर भा व स वै दे वि सं का मां न्या अविश्वास ई त्या दि॥१८॥ पट्ट उ प इ व ध
न देखि रु दार त्या छन तसर्थ जां न्या ले क ल्या न ह व स भं ना नि मि त्तः ध

नैलाईअनर्थठहराईधनतुल्लादाउनु॥१२॥सुउटाकौदिकालोभलेभार
संगःस्वास्त्रिसंगःआमावाबुसंगःइष्टमित्रसंगवृथावैरभावहुन्यारहे
धनकाआसाछोउतामात्रैआनंदहुन्यारहेछ॥१३॥सुधनलेमोहि
तभयाकापाणिःधनैकानिमित्रःसंगाममाकोटिईषाणन्यागगयनि
ऊगरगछन॥१४॥देवनालेयनिप्रांथनागरिन्याज्ञानप्रकासहुन्याःउः
खसंसारसागरदेविपारजान्यामाजाहाजसोसाधनाभयाकोरसो
मलव्यदेहःउस्मायनिवालणभैकनजरलेविषयभोगमादिनविता
योभन्याःअहोयोठगियोदेहत्यागभैसरण्याकामनाउकियोःसरन
हुन्याविनिर्कैनरकवाससुगरादियोनिमाजांछन॥१५॥तसर्थःस्वर्गअ

लोक कागत माजां छ ना ना हुं छः प्रयोजन दै ना ॥ २३ ॥ एकै छ ये हो म
न देवा निरंजन देवा ये सै लाई जिते र स व सिद्धि हात्त हुं छः सि
द्धि हाता हो ॥ २४ ॥ आये दिं छः आयै बां न्दः अन्यत्र जो छः निर्फल
कै सत्य मात्र हो मिथा प्रम छ ॥ २५ ॥ कसा निरफल भन्या देखि ज
सौ पा निमथ ले छ त हुं दै नः जसौ वा जि अस्त्रि लाई न तू दिये र
सत्र हुं दै न अन्य देवता को सेवा ग न्या लाई त सौ निरफल छ ॥ २६ ॥
मन उद्देग भयो भन्या देखि आर्त नु जा नु च त्रि क्षय हुं छः मन धि
र भया देखि कल्प ना को मूल जिते र लय भया पदि आयै आयव

लनाभिहुंछ. आनिजनलाईत्रिभुवनलाईजयेदिन्यामनदेखि
 आकोईदेनतसेअर्थलेसंगततेजिकनआत्माविआविचारेर.
 मनैलाईशेधनगर्नअरुकहाकाउवाइलेपनिपूर्णसातहुनू
 ॥२७॥मनजोछ. पूर्वमनसापूर्णभयावादि. संसारजोछअम
 तसागरहोईजांछ. विषयलेव्यापेन. अनेनज्ञानेनकिंप्रयोज
 नमनलाईधिरगर्नकसातरहलेभन्यादेखि:मदेविअकोईदेन
 अहंवल्लभतिभयनेरमदृढहुंछआफुभिन्नतभैकतयोसबैर
 कंवल्लभनिभंगरकाजसोनादगरेर. ताहामहाचितलयभैर

राम०
 २९

कैतव भयापदि मन को मुक्त कंछा ॥ २८ ॥ योचित भया को ये सो विज
जका मति सग जो नूर स कै कंछा यो कृपा पदि जाहां विन मिलो उ
ई को क कंछा सर्व ॥ २९ ॥ सिध्य भया को चित्त हो परं वला भया
को आत्मा हो आ के आत्मा महां आ के चित्त जो रिर कंछा चित्त सांत
नाम प्रकृत समा ॥ ३० ॥ जसै रुखा ठा व को विश्वा यत्न ले मुखि ठा व
मा ले जां दा स रा मा त्र उः ख कंछा तसै जत्न ले लय न लागं जा हनि
मा त्र उः ख कंछा ताहा लय भयापदि परमानंद आ प भयापदि क
को ना स कंछा को जन्म छ ॥ ३१ ॥ इति श्री योग मने लय नाम चतुर्थ प

करणं ॥४॥ वासना विवेक कहुं: राम सो आत्मा महं विचार गर्त. मन
को स्वा मि को हो. रूप को हो. मेरी गति कसो रहे छ ॥१॥ को कसो रहे छ
भन्या देवियो विन जो रहे छ. कोहि अंत न पाया काहु म वृक्ष रहे छ
जसो तुलो वृक्ष भया का हा व मा हा क ति टा टा ला गया प नि पू ला ता दे
रहे छ. विचारु दे रहं छ तसो यो विन कोहु म आ फे आय भया को छ
र का विरवा पाणि हुं हा जों छ. हरा उ न जां छ ते से का रण जो ज्ञान्या जा
णि ले फूल न को का स ना हो दिख दि विन का वृक्ष ला ई स मा ति ति आ
ये आ पये ठ माल यहु न नू न वे आ नंद स चि दानं द ॥२॥ कसो तरह ले

राम०

२३

विचारगन्तुं भक्त्या देवि जसौ गरिभार्य भये रघूरु गरिध्यामे विचार
गरन्तुं र-आदि आत्मा राम विक्रमन्तुं ॥४॥ केरि रसातर हले वि
चारगन्तुं ज्ञानको तत्त्वज्ञान गरै र-आत्मा विद्यालैः आत्मा को विचा
रुं गरिजे मित्र जन निरंतर आत्मा माहात्म्य भै आनन्द गद्गद ॥५॥
विचार गरै रजसुले मनको सो भाव पाउछु वला विमुक्ति वा
दि देवता संसार माहाः माया रुकत त्वहं स्वयं भिन्न नास्ति त्व
अस्य राजकुछ भिन्न भयास्वरित कुछ ॥६॥ दस दिग्गाल भये र
स्थिति राखि रह्यु को हि मूर्ख पागिले भिन्न भावले भजु दखरु

भिन्न देखाई दिंदे. स्थिति कारण के रि आशु भावना. नास कुंछ.
 जो भगवान्. आकुल होइ जांछे. जसै व डी दा ता छे तसे कारणा
 ले जस ले आशु भगवान् लाई पाई न्युत व उं सै भाव न जांछे. तव
 संसार ले: और से और छ भनि विवेक पा उं देन. जस को पासना
 उं दाये वल ज्ञान ले जू क भये र जसै या निम हा या निमि ल छे त
 सै गरि म ति मा म ति मि ला उ न. पूनः वासना त्यक्त ग रे र प्राण
 लाई रोध नाग न्याय छि ई क्षा पूर्ण हुंछे ॥ त त र सा स्त्र ले सा धन
 गत ले अभ्यास ले चर भय आ उं देन. चित्र थि र हुंछे. ते स दिन

राम०
 २३

देविः सक मास माहा अथ वा उई मास माध्या न का अभा स लेः
स माध भ या प दि म ला ई पा उ ई ॥ ८ ॥ स सं ग त को वा व हो रा ग
न्या प दि सं सार को वा स ना ले व्या प्रै न ता न द ड ऊं छ यो मे री त
त हो इ न भानिः त व को आ सा द्रा या प दि सर्व व सु को ना स ऊं
छ ॥ ९ ॥ त व द ड ऊं छ र सां त भा व ले यो त न को हि सि ला हो भ ने
र ज उ म्भै क न जो ये त न्य रु य रा म पा उ ई त व वि ष अ मृत ऊं
छ को हि स ये भा व ले सी कार रा वि क न नां त भ य र दे हि वि
दे हि के हि जां दे न त व उ स द्र रु स का मन का ना स ऊं छ र वि

परवाहुंछः बोल्याभन्याजोवोल्छ. सोहुंछा॥१०॥ कोहिसत्यभावले
देहिजोछविदेहिदेव्यापदिआकासमालहाईजांछ. सून्येहोईजांछ
तवतेसजोभिकासुखडःखनोछ. जोछटमाहावालाकोकटाशर
जोछ. स्वप्नामाहाने. हुन्याः स्वप्नादेहिजोछ. स्वप्नकतत्वहोईजांछ
तवरासपाउंछः रामैहुंछ॥११॥ सोदेहिआकासहुंछ. काहाछका
हादेननिरंतरहुंछ॥१२॥ जोनाधिरजलेमेरोदेहिहोईनभन्येर
त्यक्तगरेरआसाधोइंदछ. आत्माकोमात्रेविनारगदछा. अन्य
कर्मनासिछसोसर्वनासिदुरुसहो॥१३॥ संसारकोवासनादे

विनेश भयेरु. स्वमां सरुचिराद्य को यो नर न वृत्त ज्ञान मा हो मे
रः जौना सा हिले वृत्त वृत्त महा समा धलाये रशां न भयेर नो जौ
निवसाद्य. सो भगवान् को आत्मा हो सो यं सरुष को आत्मा आये
अविनासि हो ॥१४॥ स व नर क को धाये ते उवा सो हं आत्मा संग या न
से उं चारी वे को हि सा निज न हो ई स्वरा लाई या उं दूत वसित जान
॥१५॥ यानि काज सो आकार न भया को अक्षर दोख रहित भया को
आफै आप अति स्वरूप लाभे ते संय ना सि संसय भया संसय मा
हाडु ल्या मा हा ना प भया को विष व संन्या वा ढा गाल न्या र सो संसा
र द्य. र सो संसार महा राम का भक्त द्य. विषय को निरूप न ग द सं

सारलाईसितलाहुंछ. रामकोनिरूपणगर्दासंसारलाईविषव
र्षाजसोहुंछ॥१६॥इतिश्रीगयासनायविक्रमंमंत्रकरण॥५॥
जिवनिर्णयप्रकृतिदेविपरबोधमहंभूदनिरंजनःअनश्नो
योसोआफूमगवान्छआफैदेखिविन्धाआत्मायोदेहिधारण
गरेरमायास्वरूपिभयर. नरकमोहोलेआफुआत्मादेखदेन
एहिआनन्दविलासहोभनैहमनबुझिईन्दियेकोआदिभयर
असंतेसर्वरुसोआनन्दभयरआलादेखिसुखआकेदेनभं
छ. कोहिवलभगवान्आफूछ. भंदाः अहोआश्चर्यमादछते

राम०
२५

सुलाईजिवहोभनिजांनू॥१॥६०॥खभयामाहायो६०॥खहोयोसूष
होयोमित्रहोसनुयोसंपतियोमानहो॥योअपमानहो॥उदासभ
यो॥रलोचनागन्याहर्षभयारगुमानगन्यातो॥रुषटमाहावस्था
को॥ध॥तेस्कोनाडंजिवहो॥१॥॥जोजालेतेसैजिवलाई॥धेरगरिनिरा
साभये॥आफ्रापुत्रभयापनिविरानाभयापनिनिष्पहभये
र॥सकंतमेकनमेशेरुपये॥रहंदमर्यापुभने॥आफैआफ
आफसांतभयापधि॥विरागुहुं॥ध॥धर्तिजेसोअवलहुं॥ध॥धर्तिज
निरहंद॥तस्तिरहंद॥३॥॥विहो॥कपनिपंचभूतपनिकोहिअज्ञा

न का क थ ना उ या धि वि घा दि रा भिर य उ त्प ति प्र ल य ऊं च धि रै दे नः
 जा ति य स्वे धि र च य न्य व ल द् ॥ ४ ॥ स भै दे वि अ ति त भ या को जा हा ना
 हां उ म्पा कोः आ का स ध र ति अ थ यं च र त्त भ या को ज ति भ या को
 म र ल स क उ रा दि उ रा ल य अ ल ष द रि या उं जो र क स स के यो
 आ फु भ ग वा न् को म हि मा व क् ऊं दे न आ फे भ ग वा न् का रु या
 ले अं त र र वो ध भ यो व क् ऊं दे न आ अ र्थ वि च मा हा जि व स
 भा व ले उ वे रा ग दे ग म न ग दे आ फा म न मा हा आ फे वे ल द्
 ॥ ५ ॥ द र अ को आ अ र्थ दे षा यो वि का जो छ द् दे द् अ नि वा रं वा
 र वा र व सि क ल्प न्मा व हि ज न्म न्मा र सो दे वा उं हा उं न्पा र अ सा उं

राम०
 ३६

न्या मा या छ मे रा वृद्धि प नि छै न श स प नि छै न ॥ ६ ॥ मे रै ज्ञान देखि
षो स संसार उ त्प ति ऊं छ. मे मा हा ल य ऊं छ. मा या दोष प र श्र प र वि
दान च ८ ३ रा ज्य कर ता अ हा ॥ ७ ॥ सर्व भू ता नां प्राणि नां अंतर नि
रंतर पिर भये र. नित्य मूक्त स वि दाने द प त्थ क चै त न्म रूप उ
स हं अ हं न मा मि ॥ ८ ॥ इति योग आत्मा सा रण मध्ये ष ष्ट म प्र कर
णं ॥ ९ ॥ उद्धि निरूप न्या वा हि स्को त मा सा दे ष न्या जो दू धि छः त से उ
द्धि ले वा हि स्को डि भि व आत्मा ला ई हे न्. जो वा हि र को क सा भि त्र वो
ध न्. वा हि र खे ल न्या प्र वि स प क ति जो छ सो भि त्र श क त त्व ग रि वा

धन ॥१॥ अर्ण दृष्टि गरि देखतु . वाहिर वर्जि गर्त . कोहि ध्यान का अभ्या
 स ले सक सभा धला ग्य भन्या जिव मक्त आपे आपरा मया प्रभया
 ॥२॥ वासि अनेक मित्र सक . वाहिर अनेक देव न्या चित्र लाई भिच
 लाई सक वो धरु न हृदय को वो धरु वस . वाहिर जउ ह वस . आउ
 दो आसा दो डि पिछे को मो ह त्या गि ते स्को ना उ आये आप वेरा मि ॥३॥
 चित्र राग वासना आदि सर्वा सत्य क ग रे वाहिर का समाचार स
 रद भ निज स्ले वट माहा कहि छ . समाचार दो डि समा धिलाई ज
 स्ले जिउ तो स वेरा मि मिले राव वा ॥४॥ ज सो उ ई हो व माहा अगि उ

राम०
 २७

आलगा नूर. उईछ. जोर नूर कहुं छ तसै गरि आत्मा माहा मतल
 सग नूर तव अछ निरंजन वोध सकै छ. येहो सुखि सुखो सुख घोडि
 यो देहि मान का मासा ले सर्वत्र वा विहि रहं छ. कोहि वलिया ले दुग
 ईस न्या जं जाल लाग्यो. को छ ज्ञान का खऊले काटेह वोध भया पदि
 सुखि हुं छ ॥५॥ देहिलाई तेक ग रे रजसै गरि अविदेष्ट दा पदि भय
 लाग दछ र ॥ आ फुफ कि आ बा के काई हे दछ तसै गरियो संसार
 रहे त्या विन लाई फुफ कायर. आफु पनि फुफ केर. सकत तव पा पदि
 सो माहा भया कोना भैक न सुखि हुं छ ॥६॥ जसै स्वप्ना माहा अनेक रु

रूप हर ईजा छ. न सौ सये त भये आत्मा वृत्त ज्ञान जा ग्या पदि आये
 आ प सक वृत्त ऊं छ. यो संसार हत ईजां छ. देख देन ॥ ७ ॥ मदे विद्या ह
 आत्मा भयो कि या ह आत्मा देखि म भन्ना भनि. विचार गनूर. भाव
 नाले यो दोई भया को रहे छ भनि भाव नामे टिल य भया पदि को
 न तें. को न सक त त्व भयो ॥ ८ ॥ संकल्प जो छ कल्प ना ते सै ला ई को डे
 र क लो पा यै समा त्वर. मन सा वो छ. मन ले जिति मनै छ नि हो:
 असंग सा ह ले दृढ भयर का द्या पदि आत्मा ले आत्मा लाई जिते र
 मन मूनि से न हो ॥ ९ ॥ जौ ना अर्थ ले छ रव दुःख का खन भै क न लुध मा

राम
 २८

हा पा निमित्ता जा हि हित मा हा मन मिला रे रत्न उ भ य रू. रह न्या फे
रि हं सा ले उ द मा को. पा नि पु द्या उ द जा हि. दू द्या उ न्या सा दे हि रा मे
हो ॥ १० ॥ ए सो वि वा र ग रि ह मां स ह वि न दि दे र. क त्वं वै त न्या वि ग्र ह
दे हि ले स्वा मि जा हा वि त्त मा द्. ये हो भ नि जा न्दे न. स्वा मि ले मे रें दे
हि हो म जा हा पु भ नि जां दे न वा हि र को स क ल वि ज दे उ दे व ता जा न्या
उ दि को हो भ नि वि वा र ग र्त् ॥ ११ ॥ ए सो दे व ता स वै जा न्या आ फु त जा नि
हि न्या दे व तै को दे व ता भ या को ए स्य र मा न्या को ग म्य ह वं स भं न्या पू रू
स ले. का र ज सो दे हि मा टा का ठे ला ज सो. स न दे व उ त व दा ह को ग म्य

ऊं धृ. परमात्मा मिले नृणां मनुष्याणां मनुष्ये लोको हि वृक्षस्य मे वि
 आले मात्र पाई च भंदा विस्मय आश्चर्य मां धा ॥ १३ ॥ को हि अविद्या का
 विचार ले सत्ये भाव ले ते स्को प्रलय पाई च नृणां ऊं धा ॥ १४ ॥ सर्व कानि
 रणं सर्व सर्व आ कै आ फल हो मुक्ति दित्या भावना हो. अने क क
 म माहात्म्य भावना गन्या देवि कर्म का चतु मार का फल दित्या मे हो
 मेरो मूत्र हवत् भन्या पुरुष ले को हि वृद्धि ले भेद ग रे र सर्व कर्म
 त्यक्त गन्तु. अक मि भै रहनु आपे आप मूक्त ह ॥ १५ ॥ इति योग ब्रह्म
 निरुपनं सप्तमं प्रकरणं ॥ ७ ॥ जौ ना पुरुष ले देहि देवि पृथक् भय ह

राम ०
 ३२

देवलमाहासूत्रिवसाजाहिथितिरहंउआनिवित्तामगरिवसादृष्टि
विविसेषकुं होआकुसकस्वयंभविद्यतिरकेस्वयेकुंछ॥१॥जोनाह
रुसलेयोआत्माजात्याविज्ञागतपायोतेसुसुसलेसंसारतिर
कंठोफकिआफ्राआत्मातिरमनफकाईहालुधकोहिउकारूपआ
पेआपवसमहालयभैआनन्दगर्ध॥८॥जोनाआद्यभैद्यमाहाःस
द्वस्वरूपगंधस्पर्शसित०उस्वजोजाददसोराद्यवदोतसेलेअको
नाउजवृद्ध०रामकोनामैहो०तेहिआत्मादेविपरआपेआपवैतन्य
रूपवसजात्यास्वपरमेस्वरैहो॥३॥जसैवडोगंभिरवसदतसैवडो

गं भिरुनिर्नयगर्नतसैनिर्मलबुद्धतसैनिर्मलतामगर्नतेहिरा
 लाहोतेहिसचिह्नानंदहो॥४॥ जोनायज्ञलेजोनाज्ञानलेईयंयोतत्वजा
 दुष्ट॥ जान्यापदिजो नितिकर्मद्यत्ताकगर्न जुक्ति लेलायेगनुसहि
 जोगजुक्ति ले मवसिष्टमुनिभयांस्वतक सनंदकुमारकाकुमार
 दुष्ट सहिजोगलेसिवआपजोगिजोगभयोगजानिभयोजोहोलाजोग
 देविकर्ताहताआकेछेनदेहिलाईवाढिदढभयेरसनलाईजितिस
 ता२ मतकापाहिलासारिआपेआवलसहुनु॥५॥ अहमहांजोआ
 कूवलसद्यआकावा नि किंचित्मेदछेन ज्ञानपनिभिन्नछेन ज्ञान

राम०
 २०

करता प्रतिभित देन. जसो गनू तसो ऊं छ ॥ ६ ॥ बुलाविलु सिवाई श्रुति
देवता ले जसो २ जोग गछे: तसो २ पात्र भया को छ निम्का घट मा हां
आये आ पूछ ॥ ७ ॥ अन्त देहि सर्व पाणिनां विडूपाये उलंछ. मित्र ना
सिद्धे न ॥ ८ ॥ सर्व विश्व संसार अहं परमात्मा अयं स्वयं न भनो न
भविष्यति न दोस्तो न भावि अमे न दिभाव ना सिद्धे न ॥ ९ ॥ एवं पुन
विद्वाकारं सर्व आत्मा मूला अयं तितुनि: कामिनि: कोप ॥ १० ॥ इति भा
वजो जानला. नम ऊं न अको छ जो बुला छ आये आ पतिरंतर उ
देग न उपा सा सर्वत्र आनन्द दूर ॥ ११ ॥ शास्त्र आत्मा का संबंध लेखा

मान्यः सर्वदेह महाः जो जो गिवस्था को दू - त से जो गिलाई सुवधा
 नगरेर - आत्मा लय भयो सो आत्मा अर्चन भवति ते आत्मा कोः ७
 जो भयो सो आत्मा संतुष्ट भयो ॥ १२ ॥ इति योग आत्मा अर्चनो नाम अ
 ष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ अस्मिं यो देहि जो दूई दि-आ सुभया को अफलो
 पभया को इन्द्रियो वराग न्या - इन्द्रि देविद्यात कहु न्या रसात महा
 जिव जो दू - मल ले गुटि भी कन वा चिया को दू - अयं सो हं भनि ई
 ति भाव सं न दू - एवं सर्व विदा का स दू - घन पूरा - घट्टर पूरा दू -
 जति सम्यगिति रह दू तति सम्यगिति जिव महा स्त्रे हे - का दियो को व

६६ माया को जो निमात्र छ. आये ते से माया माहाविला इगयो मारु
प पल २ यो ॥ १ ॥ अनिरु सृष्टि माहाचार जात भंछ. कसले २ यो को
काचना यो निजात वल्ले दे उक्ता विजवठ ताछ. यो वल्ले को हो ॥ २ ॥
सुइस उक्ता विज क मिछ. यो सुउ को हो जा हा ता हा स कल पटना
द विद सो हंस छुति न्चार जात का हा छ. आये जि व जो ईस्वरे हो ॥ ३ ॥
जसे बाल वले के हिजां दे न रुणा को मान बल ग छ. सरिर काल भ
रा जां दे न ॥ ४ ॥ तसे पुरुष ले य नि असत्य संग कल नालिय र भुम
रा ग छ मूढ मति ले जिव देष ते न ॥ ५ ॥ जसे दस मास माहा बाल प

गर्भमासि कुरुं दः आहारमाः साताका गर्भको ते जये दामया प
 धि उदमा हास दः कोहि माता को ते जः पुनः जत्र ले अत्र मा हा आ
 उदः तव आक्रा जत्र ले आ कै जि उं दः ॥ १ ॥ तसे प्र कार ले आत्मा देवि
 देहि भयो तो मू का म तिले विवे त भया को दः तसे जत्र ले उं ले
 टि उल प र मा ई जित मा हा ल य ऊ न्यः जिव ज्ञा पे आ प दि हो ॥ ७ ॥
 जसे अ जिं गर ले मे रो जा न र सो हो भ नि ना भ ये मे था ते म हा व सि
 आ हा रा खां द म कि न भ मं भ दे न त से आ या दे वि ने स भै क न यो
 आ कै आ प धि र हो भ नि जि व ला ई सु ख उः स्व क रुं दु दे न मा या ले

राम०
 ३३

खडुः खला ग द्य ॥ **प** तसै सगर को पा निर अ न्ये न दिना ला को पा
निर के ऊँ छ को हि सं जो ग ले वा ठ द द्य सा गर मा हा मि ल द्य
वि योग व न्या सु कि जां द त सै आ न्ना को र दो हि को भे द द्ये न को
हि सं योग जा न्या प दि आ न्ना मा हा दो हि वि ला ई जां द वि योग
मे म रि जां द ज सै स प ले कां तु लि के द द्य र मु क्त ऊँ दै न द ख व
हि भ म ना ग द्य त सै त न पु टे र म्भ कि ऊँ दै न को मु क्त सो ला कां हां
ली जां द्य को दि द्य जो ड म नि ला ग्या को द्य दै द्य त सै गरि भ मं द्य
॥ **र** ज सै सु न र क ऊँ द्य ग ह ना अ न्ये क ऊँ द्य त सै आ न्ना प निर के द्य

जसै अनेक र भाति था व जंग म दृष्ट हुं छ ॥१०॥ सूर्य चन्द्र ले सितल
 कहं छु कलाल को चक्रि घुम छ रमा टा का माडा अनेक भांति २ हुं छ
 तसै यो आत्मा कर्म को चक्रि वनाय वश्या को छ • काम का विकार ला
 गुर कहिले दाहिनु कहिले बाउं घुम छ तसै कारण ले अनेक र
 भांति का विं एउ हुं छ • नलति चक्रि देखि नेरा कुन जा देन जसै या नि
 रुचत र का भांटा मा हार धूर मिल देन तेरे नेरा रहं छ ॥११॥ तसै अ
 नेक क भाति भया को वि एउ २ आसा ले भ्र ल्या को आत्मा अज्ञान का अं
 ध कार ले र क क सो ग रि देख ला ॥१२॥ जसै आ का स मा ध लो र धु वा

गा धरु. सूर्य का किरण ठाक धरु. आस देवि हिन. तसै यो बुद्धि
का विंव मा हा त्रिगुण कोरं अज्ञान को विता का वाणि ग दो सो ठा
का को धरु. तव आत्मा देवि हिन ॥ १३ ॥ जसै अग्नि संग लो हो
रा धुर लो हो मा हा अग्नि जां धरु तसै गरि इंद्रि आदि विषये भा
ग मा हा आत्मा जां धरु गर्भ मा हा पति तसै गरि जां धरु पिरा व धरु
रजसो विरया को अंस व धरु तसै फल कुं धरु. अनि फल जां धरु
रजसा को तसै विरजा कुं धरु का हा देवि आ उ धरु. जां हा ता हां आ
त्मा आवे क तां धरु ॥ १४ ॥ जसै राज अदृष्ट धरु. देष न कुं दे न चंद्र मा के

रराहु को संयोग हुंदा. योग ले देखि हिंदू. तसे आत्मा देखि हिंदू ॥३५
 ३५ को हिता न काग म ले योग का वल ले तत्त्व को र आत्मा को संयो
 ग हुं छ जो ग ले देखि दो इ को र क भयो: योग भयो ॥३६॥ यो देखि ज
 उ छ वे से का संग त ले आत्मा प निज उ भयो ॥३७॥ ज से पानि मा हा
 का छ रा व तर ता हा अग्नि ला दे न ग ल द छ र पानि. हुं छ. र के म त हुं
 छ. तो अग्नि का हा आगे भंनू ॥३८॥ त से गरि योग ज उ संयोगी आत्मा
 योग का वल ले जगा देखि देहि का ग त मा हां जां छ. छ देखि ते से अर्थ ले
 आत्मा य नि स भ ते चिंता ज उ स न ज उ स रा प देखि ते तो ज उ स न नाम गा

वैतेजउजावैतेजउसंधूस्काविस्वमाहाअग्निहालियानिमाडुवासाका
हाजागलासूर्यकातेजजसोभयाकाडुलाअवरयातिसोचला॥१२॥विना
योगलेआनन्दहुंदैनजतलेदेविंधजसे० उषदेविधुवांडुहुंदेतिलादेवि
तेलहुंधकाधदेविअग्निहुंधगाईदेविद्यतहुंधतसेजतलेसरिर
देविआत्माकोलाभहुंध० तवनाशयनकाकपालेपरसिपरआनंद
सेआनंदहुंधआनंदहुंध॥२०॥जसेगरिकटिककोआगेमलिराष्ट्र
फटिककोतेजटाकिदिंधजसेगरिधर्तिलाईधकासलेटादकाकोध
॥२१॥तसेगरिसर्वपदार्थमाहाईश्वरलेटाकाकोध॥ईश्वरयायोभन्या
पदार्थआफैछवायतभन्यादेहिपनिआहुंदैन॥२२॥अंधकारमहाजो

निका आ उर जा हां आ फेर त कं भ द ता हां जो मिले का दे णा ई दिं द - न से वि
 आ जा त ले का भिरु वि दिं द आ फेर आप दे प्र द ॥ १३ ॥ ज से द र्प र्मा आ दि से प्र
 का स ऊं द त री निर्म ल भ या प दि उ डि का वि व मा हा आ ता प्र का स ऊं द त
 व ज ति स म्म प धि वि र हं द त ति स म्म क ल्प णा को मू ल भै क न स्व रु पि
 नि रा सा भै अ म्भ त र वि व सं ग जो ग २ वि जो ग को र क भां डे भै क न स दा
 सो यं आ ता उ द य ऊं द - आ ता आ का स नि रु प त भ या प कि नि व आ दि
 प रा प र आ ये आ प हो आ दि त अं ते र हि त स ते वि ड प नि वि क ल्प ॥ १४ ॥ इ ति
 पु ल वि धा यां व सि ष्ट यो ग सा स्त्रे त व प्र क र णं स मा प्र ॥ १ या द द्या ना उ स क
 द द्या लि खि तं मा या ॥ यदि शु को वा अ शु को वा म म हो वो न दी य ता म् ॥ शु भं ॥

राम ०
 ३५